हिंदी (ऐच्छिक) XI-XII

उच्चतर माध्यमिक स्तर में प्रवेश लेने वाला विद्यार्थी पहली बार सामान्य शिक्षा से विशेष अनुशासन की शिक्षा की ओर उन्मुख होता है। दस वर्षों में विद्यार्थी भाषा के कौशलों से परिचित हो जाता है। भाषा और साहित्य के स्तर पर उसका दायरा अब घर, पास-पड़ोस, स्कूल, प्रांत और देश से होता हुआ धीरे-धीरे विश्व तक फैल जाता है। वह इस उम्र में पहुँच चुका है कि देश की सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक समस्याओं पर विचार-विमर्श कर सके, एक जिम्मेदार नागरिक की तरह अपनी जिम्मेदारियों को समझ सके तथा देश और खुद को सही दिशा दे सकने में भाषा की ताकत को पहचान सके। ऐसे दृढ़ भाषिक और वैचारिक आधार के साथ जब विद्यार्थी आता है तो उसे विमर्श की भाषा के रूप में हिंदी की व्यापक समझ और प्रयोग में दक्ष बनाना सबसे पहला उद्देश्य होगा। किशोरावस्था से युवावस्था के इस नाजुक मोड़ पर किसी भी विषय का चुनाव करते समय बच्चे और उनके अभिभावक इस बात को लेकर सबसे अधिक चिंतित रहते हैं कि चयनित विषय उनके भावी कैरियर और जीविका के अवसरों में मदद करेगा कि नहीं। इस उम्र के विद्यार्थियों में चिंतन और निर्णय करने की प्रवृत्ति भी प्रबल होती है। इसी आधार पर वे अपने मानसिक, सामाजिक, बौद्धिक और भाषिक विकास के प्रति भी सचेत होते हैं और अपने भावी अध्ययन की दिशा तय करते हैं। इस स्तर पर ऐच्छिक हिंदी का अध्ययन एक सृजनात्मक, साहित्यिक, सांस्कृतिक और विभिन्न प्रयुक्तियों की भाषा के रूप में होगा। इस बात पर भी बल दिया जाएगा कि निरंतर विकसित होती हिंदी के अखिल भारतीय स्वरूप से बच्चे का रिश्ता बन सके।

इस स्तर पर विद्यार्थियों में भाषा के लिखित प्रयोग के साथ-साथ उसके मौखिक प्रयोग की कुशलता और दक्षता का विकास भी ज़रूरी है। प्रयास यह भी होगा कि विद्यार्थी अपने बिखरे हुए विचारों और भावों की सहज और मौलिक अभिव्यक्ति की क्षमता हासिल कर सकें।

इस पाठ्यक्रम के अध्ययन से (i) विद्यार्थी अपनी रुचि और आवश्यकता के अनुरूप साहित्य का गहन और विशेष अध्ययन जारी रख सकेंगे। (ii) विश्वविद्यालय स्तर पर निर्धारित हिंदी साहित्य से संबंधित पाठ्यक्रम के साथ सहज संबंध स्थापित कर सकेंगे। (iii) लेखन-कौशल के व्यवहारिक और सृजनात्मक रूपों की अभिव्यक्ति में सक्षम हो सकेंगे। (iv) रोजगार के किसी भी क्षेत्र में जाने पर भाषा का प्रयोग प्रभावी ढंग से कर सकेंगे। और (v) यह पाठ्यक्रम विद्यार्थी को संचार तथा प्रकाशन जैसे विभिन्न-क्षेत्रों में अपनी क्षमता आजमाने के अवसर प्रदान कर सकता है।

उद्देश्य

- सृजनात्मक साहित्य की सराहना, उसका आनंद उठाना और उसके प्रति सृजनात्मक और आलोचनात्मक दृष्टि का विकास।
- साहित्य की विविध विधाओं (कविता, कहानी, निबंध आदि), महत्वपूर्ण कवियों और रचनाकारों, प्रमुख धाराओं और शैलियों का परिचय कराना।
- भाषा की सृजनात्मक बारीकियों और व्यावहारिक प्रयोग का बोध तथा उसकी संदर्भ और समय के अनुसार प्रभावशाली ढंग से मौखिक और लिखित अभिव्यक्ति कर सकना।
- विभिन्न ज्ञानानुशासनों के विमर्श की भाषा के रूप में हिंदी की विशिष्ट प्रकृति एवं क्षमता का बोध कराना।
- साहित्य की प्रभावकारी क्षमता का उपयोग करते हुए सभी प्रकार की विविधताओं (धर्म, जाति, लिंग, वर्ग, भाषा आदि) एवं अंतरों के प्रति सकारात्मक और संवेदनशील रवैये का विकास कराना।
- देश-विदेश में प्रचलित हिंदी के रूपों से परिचित कराना।
- संचार-माध्यमों (प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक) में प्रयुक्त हिंदी की प्रकृति से अवगत कराना और नवीन विधियों के प्रयोग की क्षमता का विकास करना।
- साहित्य की व्यापक धारा के बीच रखकर रचनाओं का विश्लेषण और विवेचन करने की क्षमता हासिल करना।

- विपरीत परिस्थितियों में भी भाषा का इस्तेमाल शांति के लिए करना।
- अमूर्तन की एकता का विकास और उसका कल्पनाशीलता तथा मौलिक विकास के लिए प्रयोग करना।

पाठ्यसामग्री और पाठ्य बिंदु

कक्षा XI और XII के लिए

1. काव्य और गद्य संग्रह (भाग-1 और भाग-2) इनमें प्रमुख रचनाकारों द्वारा लिखित विविध विधाओं से संबद्ध काव्य और गद्य (लगभग 20 पाठ) रचनाएँ होंगी। ये रचनाएँ रचनाकारों और विधाओं की भिन्न शैलियों से विद्यार्थी को परिचित कराएँगी। रचनाओं के साथ लेखक परिचय में उनकी साहित्यिक पृष्ठभूमि, साहित्यिक प्रवृत्ति संक्षेप में दी जा सकती है। प्रश्न-अभ्यासों में ऐसे प्रश्न होंगे जो विद्यार्थी की सृजनात्मकता और मौलिकता का विकास कर सकें। रचनाओं की प्रस्तुति इस प्रकार होगी कि विद्यार्थी के मन में साहित्य के विकासात्मक स्वरूप की समझ बन सके।
2. ग्यारहवीं और बारहवीं कक्षा के ऐच्छिक पाठ्यक्रम के लिए पूरक पठन का प्रावधान- साहित्य की विविध विधाओं की रचनाओं का एक-एक संकलन (भाग-1 और भाग-2)
3. रचनात्मक और व्यावहारिक लेखन पर आधारित एक पुस्तक- (कक्षा XI और XII दोनों के लिए) इस पुस्तक में निम्न विषय सम्मिलित होंगे-

   सर्जनात्मक लेखन-कविता, नाटक, डायरी, कहानी

   सूचना तंत्र के लिए लेखन-

   (क) प्रिंटमाध्यम (समाचार पत्र और पत्रिका)।
   वृत्त लेखन, पुस्तक-समीक्षा, साक्षात्कार, सामाजिक विषयों पर लेखन

   (ख) इलेक्ट्रॉनिक माध्यम -
   रेडियो-दूरदर्शन के लिए लेखन, समाचार लेखन

   व्यावहारिक लेखन -

   प्रतिवेदन, कार्यसूची, कार्यवृत्त

5. अध्यापकों को संबोधित एक पुस्तक- (इस पुस्तक में विधा विशेष की बनावट और पढ़ना-पढ़ाना, विद्यार्थियों को मौखिक और लिखित अभिव्यक्ति की बारीकियों से परिचित कराने की युक्तियाँ, शारीरिक रूप से बाधाग्रस्त विद्यार्थियों के लिए युक्ति तथा दृश्य-श्रव्य सामग्री के उपयोग से प्रभावी ढंग से पढ़ने-पढ़ाने पर चर्चा होगी)- यह पुस्तक दोनों कक्षाओं के लिए होगी।

टिप्पणी :

1. इस पूरे पाठ्यक्रम में चयन और प्रस्तुति दोनों स्तरों पर शारीरिक रूप से बाधाग्रस्त विद्यार्थियों पर विशेष ध्यान दिया जाएगा।
2. काव्य, गद्य और इतिहास पर रचनात्मक/परिचयात्मक कार्यक्रम बनाए जाएँगे।

शिक्षण-युक्तियाँ

इन कक्षाओं में अध्यापकों की भूमिका उचित वातावरण निर्माण में सहायक की होनी चाहिए। उनको भाषा और साहित्य की पढ़ाई में इस बात पर ध्यान देने की जरूरत होगी कि -

- कक्षा का वातावरण संवादात्मक हो ताकि अध्यापक, विद्यार्थी और पुस्तक तीनों के बीच एक रिश्ता बन सकें।
- गलत से सही की ओर पहुँचने का प्रयास हो। यानि बच्चों को स्वतंत्र रूप से बोलने, लिखने और पढ़ने दिया जाए और फिर उनसे होने वाली भूलों की पहचान कर अध्यापक अपनी पढ़ाने की शैली में परिवर्तन करे।
- ऐसे शिक्षण बिंदुओं की पहचान की जाए जिससे कक्षा में विद्यार्थी की सक्रिय भागीदारी रहे और अध्यापक भी उनका साथी हो।

53

- शारीरिक बाधाग्रस्त विद्यार्थियों के लिए उपयुक्त शिक्षण-सामग्री का इस्तेमाल किया जाए तथा किसी भी प्रकार से उन्हें अन्य विद्यार्थियों से कमतर या अलग न समझा जाए।
- विभिन्न विधाओं से संबंधित रुचिकर और महत्वपूर्ण 10 अन्य पुस्तकें- जिनका जिक्र पाठ्यपुस्तक के अंत में किया जाएगा-स्वयं पढ़ने के लिए प्रेरित किया जाए।
- कक्षा में अध्यापक को हर प्रकार की विभिन्नताओं (लिंग,धर्म, जाति, वर्ग आदि) के प्रति सकारात्मक और संवेदनशील वातावरण निर्मित करना चाहिए।
- सृजनात्मकता के अभ्यास के लिए विद्यार्थी से साल में कम से कम दो रचनाएँ लिखवाई जाएँ।

अंक विभाजन

मूल्यांकन की दृष्टि से अध्ययन के लिए स्वीकृत शिक्षण-सामग्री पर 100 अंक निर्धारित किए जाएँगे जिसका अंक विभाजन इस प्रकार किया जा सकता है :

लिखित 80 प्रतिशत
मौखिक 20 प्रतिशत

हिंदी (आधार): कक्षा XI-XII

प्रस्तावना

दसवीं कक्षा तक हिंदी का अध्ययन करने वाला विद्यार्थी समझते हुए पढ़ने व सुनने के साथ-साथ हिंदी में सोचने और उसे मौखिक एवं लिखित रूप में व्यक्त कर पाने की सामान्य दक्षता अर्जित कर चुका होता है। उच्चतर माध्यमिक स्तर पर आने के बाद इन सभी दक्षताओं को सामान्य से ऊपर उस स्तर तक ले जाने की दरकार होती है, जहाँ भाषा का इस्तेमाल भिन्न-भिन्न व्यवहार-क्षेत्रों की माँगों के अनुरूप किया जा सके। आधार पाठ्यक्रम साहित्यिक बोध के साथ-साथ भाषाई दक्षता के विकास को ज्यादा अहमियत देता है। यह पाठ्यक्रम उन विद्यार्थियों के लिए उपयोगी साबित होगा, जो आगे विश्वविद्यालय में अध्ययन करते हुए हिंदी को एक विषय के रूप में पढ़ेंगे या विज्ञान/समाजविज्ञान के किसी विषय को हिंदी माध्यम से पढ़ना चाहेंगे। यह उनके लिए भी उपयोगी साबित होगा, जो उच्चतर माध्यमिक स्तर की शिक्षा के बाद किसी तरह के रोजगार में लग जाएँगे। वहाँ कामकाजी हिंदी का आधारभूत अध्ययन काम आएगा। जिन विद्यार्थियों की दिलचस्पी जनसंचार माध्यमों में होगी, उनके लिए यह पाठ्यक्रम एक आरंभिक पृष्ठभूमि निर्मित करेगा। इसके साथ ही यह पाठ्यक्रम सामान्य रूप से तरह-तरह के साहित्य के साथ विद्यार्थियों के संबंध को सहज बनाएगा। विद्यार्थी भाषिक अभिव्यक्ति के सूक्ष्म एवं जटिल रूपों से परिचित हो सकेंगे, वे यथार्थ को अपने विचारों में व्यवस्थित करने के साधन के तौर पर भाषा का अधिक सार्थक उपयोग कर पाएँगे और उनमें जीवन के प्रति मानवीय संवेदना एवं सम्यक् दृष्टि का विकास हो सकेगा।

उद्देश्य

- इन माध्यमों और विधाओं के लिए उपयुक्त भाषा प्रयोग की इतनी क्षमता उनमें आ चुकी होगी कि वे स्वयं इससे जुड़े उच्चतर पाठ्यक्रमों को समझ सकेंगे।
- सामाजिक हिंसा की भाषिक अभिव्यक्ति की समझ।
- भाषा के अंदर सक्रिय सत्ता संबंध की समझ।
- सृजनात्मक साहित्य को सराह पाने और उसका आनंद उठाने की क्षमता का विकास तथा भाषा में सौंदर्यात्मकता उत्पन्न करने वाली सृजनात्मक युक्तियों की संवेदना का विकास।
- विद्यार्थियों के भीतर सभी प्रकार की विविधताओं (धर्म, जाति, जेंडर, क्षेत्र, भाषा संबंधी) के प्रति सकारात्मक एवं विवेकपूर्ण रवैये का विकास।

- पठन-सामग्री को भिन्न-भिन्न कोणों से अलग-अलग सामाजिक, सांस्कृतिक चिंताओं के परिप्रेक्ष्य में देखने का अभ्यास कराना तथा नज़रिये की एकांगिकता के प्रति आलोचनात्मक दृष्टि का विकास करना।
- विद्यार्थी में स्तरीय साहित्य की समझ और उसका आनंद उठाने की स्फूर्ति का विकास तथा साहित्य को श्रेष्ठ बनाने वाले तत्वों की संवेदना का विकास।
- विभिन्न ज्ञानानुशासनों के विमर्श की भाषा के रूप में हिंदी की विशिष्ट प्रकृति और उसकी क्षमताओं का बोध।
- कामकाजी हिंदी के उपयोग के कौशल का विकास।
- संचार माध्यमों (प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक) में प्रयुक्त हिंदी की प्रकृति से परिचय और इन माध्यमों की माँगों के अनुरूप मौखिक एवं लिखित अभिव्यक्ति का विकास।
- विद्यार्थी में किसी भी अपरिचित विषय से संबंधित प्रासंगिक जानकारी के स्रोतों का अनुसंधान और उन्हें व्यवस्थित ढंग से उनकी मौखिक और लिखित प्रस्तुति करने की क्षमता का विकास।

पाठ्यसामग्री

कक्षा XI-XII के लिए

(1) गद्य-पद्य संग्रह, भाग-1 और भाग-2

(2) 11, 12 के लिए कामकाजी हिंदी, रचनात्मक लेखन, जनसंचार माध्यम का परिचय देने के लिए एक पुस्तक। इसमें (कामकाजी हिंदी, रचनात्मक लेखन, जनसंचार माध्यम से संबंधित सामग्री का समावेश होगा।)

(3) पूरक पाठ्यपुस्तक- कक्षा XI-XII दोनों के लिए साहित्य की विविध विधाओं की रचनाओं का एक-एक संकलन (भाग-1-2)

पाठ्य सामग्री का विस्तृत विवरण

- गद्य-पद्य संग्रह, (भाग-1) इनमें 15-18 अध्याय होंगे। कविताएँ, कहानियाँ, यत्र-वृत्तांत, संस्मरण, जीवनी, रेखाचित्र डायरी, निबंध, आत्मकथा इत्यादि हिंदी की विभिन्न साहित्यिक विधाओं से संबंधित 15-18 पाठ। पाठ्यचर्या की सिफारिश के मुताबिक कम से कम 20 फीसदी रचनाएँ हिंदीतर भाषाओं से अनूदित होंगी। पाठों के चयन में इस बात का ध्यान रखा जाएगा कि वे रोचक व सुरुचिपूर्ण हों, विविधताओं की सहज उपस्थिति की तरफ विद्यार्थियों का ध्यान आकृष्ट करें और उपदेशात्मक बोझिलता से मुक्त रहकर संवेदनशील मानवीय दृष्टि का विकास करने में समर्थ हों। पाठ्यसामग्री देश की सामासिक संस्कृति और अंतर्राष्ट्रीयता की भावना से युक्त होगी और बहुभाषिकता को दर्शाने वाली होगी। प्रत्येक पाठ के अंत में प्रश्न और अभ्यास होंगे। अभ्यास मुख्यत: रचना के आलोचनात्मक विवेचन, अलग-अलग नज़रियों से उसके अवगाहन एवं पाठ की भाषा-संरचना से संबंधित होंगे।
- इस पुस्तक में व्यावहारिक रचना संबंधी निम्नलिखित बिंदुओं का समावेश किया जा सकता है-
  - कार्यालयी पत्र, प्रारूप एवं टिप्पण लेखन (प्रारंभिक स्तर के) की पद्धति और उनके नमूने।
  - रोज़गार संबंधी आवेदन-पत्र की लेखन-विधि और उसके नमूने।
  - स्ववृत्त-लेखन की विधि और उसके नमूने।
  - विभिन्न विभागों (पानी, बिजली, टेलीफोन, परिवहन आदि) से संबंधित समस्याओं के बारे में विभागीय अधिकारियों को लिखे जाने वाले पत्रों के नमूने।
  - विज्ञापन-लेखन की विधि और उसके उदाहरण।
  - शब्दकोश, संदर्भ-ग्रंथों का संक्षिप्त परिचय और उनकी उपयोग-विधि की जानकारी।
  - गैरपारंपरिक एवं अप्रत्याशित विषयों (मसलन- किसानों की आत्महत्या, हिंसक विज्ञापन, कामकाजी औरत की शाम) पर अनुच्छेद एवं निबंध के नमूने।

- भाषण, उद्घोषणा, स्वागत-भाषण, संगोष्ठी-संचालन, आंखों देखा हाल आदि के प्रभावी संप्रेषण के लिए उपयुक्त शब्दावली, भाषा-रूपों, अभिव्यक्तियों इत्यादि की जानकारी, ताकि उनका मौखिक अभ्यास कराना संभव हो।

शिक्षण की प्रक्रिया में इन उदाहरणों का उपयोग प्रसंगानुकूल लिखित अथवा मौखिक अभिव्यक्ति का अभ्यास कराने के लिए होगा।

- गद्य-पद्य संग्रह, भाग-2 : इसमें 15 अध्याय होंगे। कविताएँ, कहानियाँ एवं संस्मरण, यात्रावृत्तांत, आत्मकथात्मक लेख, अख़बारों के संपादकीय अग्रलेख, सिनेमा, अर्थशास्त्र, इतिहास, समाजशास्त्र, विज्ञान इत्यादि से संबंधित। कम से कम 20 फीसदी रचनाएँ हिंदीतर भाषाओं से ली जाएँगी। साहित्येतर विषयों से संबंधित लेखन को शामिल करते हुए यह ध्यान रखा जाएगा कि विद्यार्थी को हिंदी के उस रूप की विशिष्ट प्रकृति का बोध हो। पाठों के अंत में दिए गए अभ्यास के अंतर्गत पाठ की समझ एवं सराहना (भाग-1 के प्रसंग में पूर्वोल्लिखित) से संबंधित प्रश्न होंगे, साथ ही, भाषा की नियमबद्ध प्रकृति एवं विमर्शगत प्रकृति को रेखांकित करने वाले अभ्यास होंगे।
- जनसंचार माध्यमों की विधाएँ : विभिन्न जनसंचार माध्यमों का परिचय देना और उनकी मुख्य विधाओं का प्रारंभिक अभ्यास कराना पाठ्यक्रम के इस हिस्से का उद्देश्य है। अलग-अलग माध्यमों की मुख्य विधाएँ इस प्रकार हो सकती हैं -

  प्रिंट माध्यम: समाचार, संपादकीय, फीचर (अपने निकट के जीवन-संदर्भों से जुड़कर इन विधाओं में लेखन करना - मसलन, स्कूल की किसी घटना पर संपादकीय, गली-मोहल्ले के किसी बड़े आयोजन पर फ़ीचर इत्यादि तथा उनके लिए उपयुक्त शीर्षक बनाना)।

  नाटक: किसी कहानी, प्रसंग, कविता आदि का नाट्यरूपांतर और उसकी प्रस्तुति।

  रेडियो : समाचार एवं रेडियो-नाटक रूपांतर (किसी नाटक/एकांकी का रेडियो-नाट्य-रूपांतरण कराया जा सकता है।)

  इंटरनेट: इंटरनेट का परिचय और 'वेब' की दुनिया में हिंदी की स्थिति की जानकारी।

अंकों का विभाजन

दोनों कक्षाओं में हिंदी (आधार) के पर्चे 100-100 अंक के होंगे, जिनमें से 40-40 अंक गद्य-पद्य संग्रह के लिए 40-40 अंक दूसरी पुस्तक के लिए एवं 20-20 अंक सतत एवं आंतरिक मूल्यांकन के लिए होंगे जिसका आधार पूरक पठन की पुस्तक और मौखिक अभिव्यक्ति का अभ्यास होगा।

शिक्षण-युक्तियाँ

- कुछ बातें इस स्तर पर हिंदी शिक्षण के लक्ष्यों के संदर्भ में सामान्य रूप से कही जा सकती हैं। एक तो यही कि कक्षा में दबाव एवं तनाव मुक्त माहौल होने की स्थिति में ही ये लक्ष्य हासिल किए जा सकते हैं। चूँकि इस पाठ्यक्रम में तैयारशुदा उत्तरों को कंठस्थ कर लेने की कोई अपेक्षा नहीं है, इसलिए चीजों को समझने और उस समझ के आधार पर उत्तर को शब्दबद्ध करने की योग्यता विकसित करना ही हमारा काम है। इस योग्यता के विकास के लिए कक्षा में विद्यार्थियों और शिक्षक के बीच निर्बाध संवाद जरूरी है। विद्यार्थी अपनी शंकाओं और उलझनों को जितना ही अधिक व्यक्त करेंगे, उतनी ही ज्यादा सफ़ाई उनमें आ पाएगी।
- भाषा की कक्षा से समाज में मौजूद विभिन्न प्रकार के द्वंद्वों पर बातचीत का मंच बनाना चाहिए। उदाहरण के लिए संविधान में शब्द विशेष के प्रयोग पर मनाही को चर्चा का विषय बनाया जा सकता है। यह समझ ज़रूरी है कि छात्रों को सिर्फ सकारात्मक पाठ देने से नहीं काम चलेगा बल्कि उन्हें समझाकर भाषिक यथार्थ का सीधे सामना करवाने वाले पाठों से परिचय होना ज़रूरी है।
- शंकाओं और उलझनों को रखने के अलावा भी कक्षा में विद्यार्थियों को अधिक-से-अधिक बोलने के लिए प्रेरित किया जाना ज़रूरी है। उन्हें यह अहसास कराया जाना चाहिए कि वे पठित सामग्री पर राय देने का

अधिकार और उसकी काबिलीयत रखते हैं। उनकी राय को तवज्जो देने और उसे बेहतर तरीके से पुनर्प्रस्तुत करने की अध्यापकीय शैली यहाँ बहुत उपयोगी होगी।

- विद्यार्थियों को संवाद में शामिल करने के लिए यह भी जरूरी होगा कि उन्हें एक नामहीन समूह न मानकर अलग-अलग व्यक्तियों के रूप में अहमियत दी जाए। शिक्षक को अकसर एक कुशल संयोजक की भूमिका में स्वयं को देखना होगा, जो किसी भी इच्छुक व्यक्ति को संवाद का भागीदार बनने से वंचित नहीं रखता, उसके कच्चे-पक्के वक्तव्य को मानक भाषा-शैली में ढालकर उसे एक आभा दे देता है और मौन को अभिव्यंजना मान बैठे लोगों को मुखर होने पर बाध्य कर देता है।
- अप्रत्याशित विषयों पर चिंतन करने और सोचे हुए की मौखिक व लिखित अभिव्यक्ति करने की योग्यता का विकास शिक्षक के सचेत प्रयास से ही संभव है। इसके लिए शिक्षक को एक निश्चित अंतराल पर नए-नए विषय प्रस्तावित कर लेख एवं अनुच्छेद लिखने तथा संभाषण करने के लिए पूरी कक्षा को प्रेरित करना होगा। यह अभ्यास ऐसा है, जिसमें विषयों की कोई सीमा तय नहीं की जा सकती। विषय की निस्सीम संभावना के बीच शिक्षक यह सुनिश्चित कर सकता है कि उसके विद्यार्थी किसी निबंध -संकलन या कुंजी से तैयारशुदा सामग्री को उतार भर न लें। तैयारशुदा सामग्री के लोभ से, बाध्यतावश ही सही मुक्ति पाकर विद्यार्थी नये तरीके से सोचने और उसे शब्दबद्ध करने के यत्न में सन्नद्ध होंगे। मौखिक अभिव्यक्ति पर भी विशेष ध्यान देने की जरूरत है, क्योंकि भविष्य में साक्षात्कार, संगोष्ठी जैसे मौकों पर यही योग्यता विद्यार्थी के काम आती है। इसके अभ्यास के सिलसिले में शिक्षक को उचित हावभाव, मानक उच्चारण, पॉज, बलाघात, हाजिरजवाबी इत्यादि पर खास बल देना होगा।
- मध्यकालीन काव्य की भाषा के मर्म से विद्यार्थी का परिचय कराने के लिए जरूरी होगा कि किताबों में आए काव्यांशों की संगीतबद्ध प्रस्तुतियों के ऑडियो-वीडियो कैसेट का तैयार किए जाएँ। अगर आसानी से कोई गायक/गायिका मिले तो कक्षा में मध्यकालीन साहित्य के अध्यापन/शिक्षण में उससे मदद ली जानी चाहिए।
- वृतचित्रों और फ़ीचर फ़िल्मों को शिक्षण सामग्री के तौर पर इस्तेमाल करने की ज़रूरत है। इनके प्रदर्शन के क्रम में इन पर लगातार बातचीत के जरिये सिनेमा के माध्यम से भाषा के प्रयोग की विशिष्टता की पहचान कराई जा सकती है और हिंदी की अलग-अलग छटा दिखाई जा सकती है। विद्यार्थियों को स्तरीय परीक्षा करने को भी कहा जा सकता है।
- कक्षा में सिर्फ एक पाठ्यपुस्तक की भौतिक उपस्थिति से बेहतर यह है कि शिक्षक के हाथ में तरह-तरह की पाठ्यसामग्री को विद्यार्थी देख सकें और शिक्षक उनका कक्षा में अलग-अलग मौकों पर इस्तेमाल कर सके।
- भाषा लगातार ग्रहण करने की क्रिया में बनती है, इसे प्रदर्शित करने का एक तरीका यह भी है कि शिक्षक खुद यह सिखा सकें कि वे भी शब्दकोश, साहित्यकोश, संदर्भग्रंथ की लगातार मदद ले रहे हैं। इससे विद्यार्थियों में इसका इस्तेमाल करने को लेकर तत्परता बढ़ेगी। अनुमान के आधार पर निकटतम अर्थ तक पहुँचकर संतुष्ट होने की जगह वे सही अर्थ की खोज करने का अर्थ समझ जाएँगे। इससे शब्दों की अलग-अलग रंगत का पता चलेगा और उनमें संवेदनशीलता बढ़ेगी। वे शब्दों के बारीक अंतर के प्रति और सजग हो पाएँगे।
- कक्षा-अध्यापन के पूरक कार्य के रूप में सेमिनार, ट्यूटोरियल कार्य, समस्या-समाधान कार्य, समूह चर्चा, परियोजना कार्य, स्वाध्याय आदि पर बल दिया जाना चाहिए। पाठ्यक्रम में जनसंचार माध्यमों से संबंधित अंशों को देखते हुए यह ज़रूरी है कि समय-समय पर इन माध्यमों से जुड़े व्यक्तियों और विशेषज्ञों को भी स्कूल में बुलाया जाए तथा उनकी देख-रेख में कार्यशालाएँ आयोजित की जाएँ।

मूल्यांकन :

चूँकि यह पाठ्यक्रम 20 फीसदी अंक सतत् एवं आंतरिक मूल्यांकन के लिए सुरक्षित रखने की सिफ़ारिश करता है, इसलिए कक्षा में शिक्षक की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण हो जाती है। उसे पाठ्यपुस्तकों के अतिरिक्त अन्य पुस्तकों के प्रति विद्यार्थी को उत्सुक बनाना है, उनकी समीक्षा एवं उन पर आयोजित संगोष्ठी के आधार पर विद्यार्थी को अंक देने हैं और इसके साथ-साथ अन्य रूपों में भी उसकी मौखिक अभिव्यक्ति का परीक्षण-मूल्यांकन करना है, इसलिए कक्षा को लगातार सक्रिय और ऊर्जस्वी बनाए रखने का गुरुतर भार उसके कंधों पर है।